सिद्ध महावीर

गजेन्द्र ठाकुर

बान्हक कात मे अनमना दीदीक घर।

घर नहि झोपड़ी कहू। गामक मोटामोटी सभ अँगना मे एक टा विधवाक घर रहैत छै। मुदा जखने परिवार पैघ होइत अछि तँ क्यो अपन घरक मुँह घुमा लैत अछि, तँ क्यो बेढ़ बना दैत अछि। आ कखनो काल ओहि राँड़-मसोमातक घरक स्थान परिवर्तन भ' जाइत अछि, आ से तेहने सन स्थिति छल अनमना दीदीक घरक।

मुदा अनमना दीदीक घर बान्हक कात मे छनि। सोझाँक मजकोठिया टोलक छथि, मुदा घुसकि क' हमर घर लग आबि गेल छथि। समंगर लोक सभ। आस-पड़ोसक धी-बेटी दिन मे, दुपहरिया मे जाइत छथि। ढील-लीख बिछबाक लेल। ककर ओ लगक छथि, से मरलाक बाद पता चलत। श्राद्धक समय जे लगक अछि से आगि देत आ तकरा घरारी भेटतै। मुदा सेहो सम्भावना आब नहि। झंझारपुर मे सासुर छलनि अनमना दीदीक। ओत' अपन बहिनक बेटा कें अपन बेटा बना राखि लेने छथि। मुदा नैहरक मोह नहि छूटल छनि।

खोपड़ी मे अबैत छथि। मास मे एक बेर तँ अबस्से। अपने सँ खेनाइ-पिनाइ, भानस-भात। मुदा झंझारपुर मे बेस पैघ घर, आँगन। बेटा-पुतोहु कें कहियो मुदा एत' नहि अनलनि। सौंसे गाम विधवा कें दीदी कहैत अछि जँ ओ नैहर मे रहैत छथि। आ फलना गाम बाली काकी जँ ओ सासुर मे रहैत छथि।

से सौंसे गाम हुनका अनमना दीदी कहैत छलनि। खोपड़ीक कात मे एक टा भगवानक मंदिर बनौने छथि। महावीर बजरंगबलीक। शुरुहे सँ ई कोठाक रहै से नहि, मुदा बना देलनि ओकरा कोठाक। अन्न-पानि बेचि क'। पहिने तँ खोपड़िये रहै। जहिया अनमना दीदी झंझारपुर जाइत रहथि, अपन खोपड़ीक फड़की भिड़का क' जाइत रहथि। बाद मे ताला आ सिक्कड़ि सँ बन्न सेहो कर' लागल रहथि। मुदा बजरंगबलीक मंदिर ओहिना खुजल रहैत छल। लोक सभक लेल...चौपहर। धी-बेटी गामक, साफ-सफाइ, झाड़ू-बहारू करैत रहथि। पक्काक



मुदा बाद मे भेल, छत ढलाइ आर बाद मे। पिटुआ रहय पहिने। जमीनक प्लास्टर करब' चाहैत रहथि, मुदा एस्टीमेट बेसी भ' गेलनि। भगवानक घर चुबैत रहत? मुदा ढलाइ आ प्लास्टर लेल पाइ कत' सँ आओत?

आइ हमरा लगै अछि जे हम सभ खूब मेहनति करैत छी। ककरो सँ सरोकार नहि अछि। ओह, समय नहि भेटैत अछि। मुदा अनमाना दीदीक दिनचर्या, भोर सँ साँझ भगवान लेल समर्पित। मुदा पोसपुत्र लेल सेहो समय निकालैत छथि। बीच-बीच मे झंझारपुर बजार लग स्थित अपन गाम जाइत छथि। ओतुक्को ब्योंत लगबैत छथि। फेर गाम अबैत छथि, नैहर। देखू, गीता पढ़ि स्थितप्रज्ञ बनबाक अहाँक प्रयास। मुदा अनमना दीदी। गोर लगै छी दीदी। नीके ना रहू। नहिये खुशी, नहिये कोनो दुख। ने कोनो आवभगतक लालसा आ ने कोनो तरहक सहयोग प्राप्तिक आकांक्षा।

जोन तकै लेल जाइत छथि धनुकटोली, दुसधटोली। ओतुक्का लोक इज्जतियो दै छनि, कोन हुनकर घरारी लेबाक छनि हिनका सभ कें। ओत' हँसितो देखै छियनि। अपन टोलक लोक सँ हट्ठे कोनो काज लेल कहितो नहि छथि। एक टा काज करत आ कनियाँ कें जा क' कहत। आ फेर दस साल धरि ओकर कनियाँ सुनबैत रहत।

—दीदी, हनुमान जीक काज छै, सड़कक कात मे छथि। हमहूँ सभ तँ जाइत-अबैत माथ झुका क' पुजबे करबनि। से बिनु बोनि लेने हम ई काज करब।

—नै यौ तीर्थ-बर्त आ भगवानक काज मँगनी मे नहि करबाक-करेबाक चाही। हम कोनो रानी-महरानी छी जे बेगारी खटा क' मंदिर बनबायब आ पोखरि खुनायब।

मुदा ढलैय्या आ प्लास्टर!

सड़कक कातक भगवानक एहि मंदिरक सटल एक बीघा खेत, सभ टा अनमना दीदीक। ढलैय्या भ' गेलाक बाद भगवानक नाम सँ लिखि देतीह। जे अन्न-पानि होयतै ओहि सँ भगवान घरक चून-पोचारा आ सफाइ होइत रहत।

कतेक दिन सँ पड़ोसी पछोड़ धेने छनि। ''दीदी। तोहर सभ सँ लगक भातिज हमहीं छियौ। ई जमीन हमर घर सँ सटल अछि। पहिलुका लोक बान्ह-सड़कक कात मे छोट जाति आ मसोमात कें घर बना दैत रहै। मुदा आब जमाना बदलि गेल छै। आब तँ सड़कक कातक घर आ जमीनक मोल बढ़ि गेल छै। तूँ आइ ने काल्हि मरि जयबें। तखन ई जमीन हमरा सभ पटीदार लेल झगड़ाक कारण बनत।''

तों आइ ने काल्हि मरि जयबें कहि क' देखियौक कोनो सधवा कें! मुदा मसोमात सँ कहि सकै छिऐ—भने ओकर पोसपुत्र-पुतोहु, नैत-नातिन होइ। ठीक छै बाबू!

''भगवानक लेल निहुछल अछि ई जमीन। एही सँ तँ हमर गुजर चलैए। जे किछु पेट काटि क' बचबैत छी से कोशिल्या भगवानक घरक ढलैया आ प्लास्टर लेल। झंझारपुरक जमीन-जालक पाइ सभ बेटा पुतोहुक छनि। से हम कोना...।''

''फेर दीदी। तूँ गप बुझबे नहि कयलें। जा जिबै छें राख ने। कर ने गुजर। हम तँ कहै छियौ जे तोरा मरलाक बाद जे पटीदार सभ आपस मे लड़त से तोरा नीक लगतौ। आ हम तोहर सभ सँ आप्त भातिज...।''

देखियौ, कहै छै जे! भातिज बाहर मे नोकरी करै छथि। जे गाम मे रहै अछि से तँ भेंट कर' मे संकोच करै अछि जे किछु देमए नहि पड़ए। ई मुदा जहिया गाम अबै अछि आ

हम गाम मे रहै छी तँ भेंट करबाक लेल अबिते अछि। आ एहि बेर तँ हम झंझारपुर मे रही तँ ओतहु आयल रहय। सैह तँ कहलियै जे ई कोना क' फुरेलै। से आब बुझलिऐ। मुदा ई ढलैय्या कोना क' होयत। प्लास्टर तँ बादो मे करबा देबै। ततेक चुबै अछि, एहि साल तँ आरो बेसी चुब' लागल अछि। पिटुआ छत, दुइयो साल नहि चलल। ओकरा ओदारि क' ढलैय्या करत करीम मियाँ आ लछमी मिस्त्री, तखने ठीक होयत। देखै छी।''

भातिजक आबाजाही बढ़ि गेल अछि आइ-काल्हि।

''ठीक छै दीदी, अदहे जमीन द' दिअ'। दस कट्ठा मे अहाँक भातिजक बसोबासक संग भगवानक लेल सेहो जमीन बचि जायत।''

''मुदा बान्ह पर अहाँक घड़ारीक लागि तँ नहिए होयत। तखन की फायदा होयत अहाँ कें।''

''छोड़ू ने। एखनो तँ टोल द' क' अबिते ने छी। चौक-चौबटिया आ बान्हक कात मे घर बनेबाक तँ आब ने चलन भेल अछि। आ आब चौबटिया आ बान्हक कात मे तँ भगवानेक घर ने शोभतनि। दस कट्ठाक दस हजार जहिया कहब हम द' देब। रजिस्ट्री बादे मे बरु होयत।''

''ठीक छै। तखन हम सोचि क' कहब। एक बेर बेटा-पुतोहु सँ पूछि लैत छी।''

कोन उपाय! भगवानक घरक देबाल सभ मे कजरी लागि गेल अछि। देबाल छोड़, बजरंगबलीक मूर्ति मे सेहो कजरी लागि गेल अछि। अनमना दीदी सोचिते रहि गेलथि। आ सोचिते-सोचिते भोर भ' गेलनि।

द' दै छिऐ जमीन। आर उपाय की? नइँ!

बेटा-पुतोहु कहलकनि जे माए! ओतुक्का जमीन तँ भगवानक छनि। आ हम सभ से शुरुहे सँ बुझै छी। मुदा देखब। ओ कोनो चालि तँ नहि चलि रहल अछि।

''कोन चालि? पाइ तँ किछु बेसीए द' रहल अछि। भगवानक मंदिरक लेल, दस कट्ठा कम थोड़बेक होइ छै। पाइ जुटबैत-जुटबैत मरि गेलहुँ। ई अधखरु मंदिर ओहने रहि जायत? गप करै छी लछमी मिस्त्री आ करीम मियाँ सँ।''

दस हजार मे ढलैय्या, प्लास्टरक संग चहरदिवारी सेहो बनि जायत। एस्टीमेट बनि गेल। रजिस्ट्रीक अगिले दिन सँ काज आरम्भ। आ भादवक पहिने समापन।

चलू रजिस्ट्री भ' गेल। दासजी कागज-पत्तर मे बड्ड माहिर लोक। पुछबाक काज छै! धुर! पकिया कागत बनल हैत।

''भगवानक लेल कागत बनेबाक पहिल अवसर भेटल अछि दीदी।'' दासजीक गप सँ अनमना दीदी दासोदास भ' गेलीह।

लोक कहै छै झुट्ठे जे लोकक श्रद्धा भगवान पर सँ कम भेल जाइ छै। ई दासजी! कहियो ने भेंट आ ने जान-पहिचान। दू टा रजिस्ट्रीक कागत-एक टा दसकठिया भातिजक नाम आ दोसर भगवानक नाम, मुदा एक्के फीस मे बना रहल छथि। साफे कहि देलकनि—दीदी भगवानक जमीनक रजिस्ट्रीक पाइ हम एकदम्मे नहि लेब। जे बेर-बखत पर काज आबय सैह ने अप्पन लोक। ठीके बूढ़-पुरान कहि गेल छथि। यैह सभ देखि क' ने कहने छथि।

अनमना दीदी बाइ मे छथि। पयरे गाम अयलीह। सोह मे किछु नहि फुराइत छनि। मंदिर कें अजबारू, काल्हि सँ काजक आरम्भ अछि। लछमी मिस्त्री अपन तेगारी, डोरी, करणी सभ राखि गेल अछि। डब्बुक सभ पानि भरबाक लेल अनमना दीदी जोगा क' राखनहिये छथि। पोखरि बगले मे अछि। लीढ़ सँ भरल, मुदा कात मे महीस सभ कें पानि पियबाक लेल लोक सभ कनेक साफ कइए देने अछि।

मुदा भोरे मे घोल-फचक्का! करीम मिआँ कें काज करबा सँ रोकि देल गेल। के रोकलक? भातिज कें खबरि दियौक। मुदा ओ तँ काल्हि झंझारपुर सँ सोझे नोकरी पर चलि गेलाह। रजिस्ट्रीक कागत ओना तँ अनमाना दीदी लग सेहो छनि। भातिजक सार रोकने अछि काज। चहारदेबारी नहि बनब' देत। मुदा काल्हि रजिस्ट्री काल तँ रहय ईहो। तखन? कहैत अछि जे बान्हक कातबला जमीन मेहमानक छियनि, अयँ यौ! तखन तँ ई मंदिरो ओकरे हिस्सा मे भ' गेलै। कोनो बुझबा मे गलती तँ नहि क' रहल अछि। भातिज मासक शुरुहे मे जा क' तँ अओताह, दरमाहा लैए क' ने। मास भरि अनमाना दीदी गाम आ झंझारपुर करैत रहलीह। बेटा-पुतोहु कहनि जे ई भातिजेक चालि तँ नहि अछि। नइँ, से नहि कहू। दासजी तँ नीक लोक रहए। देखू।

''दीदी। अहाँ कें कोनो धोखा भ' रहल अछि।''

''तखन तँ ई मंदिरो अहींक भेल ने।''

''नइँ दीदी। ई मंदिर तँ भगवानक छियनि। हुनके रहतनि। आ पाछूक जमीनक मालिक सेहो भगवाने।''

''आ तखन तँ हमर ई खोपड़ी सेहो अहींक भेल ने।''

''नइँ दीदी। अहाँ जहिया धरि जीब तहिया धरि रहू। के मना करत?''

''बौआ बड्ड उपकार अहाँक। आ पाछू दिसका जमीनक लागि तँ नइँ बान्ह दिस सँ अछि आ नहिये टोल दिस सँ।''

''दीदी! अहाँ हमरा जमीन बाटे जाऊ ने, के मना करत? आ आरि पर बाटे खेत मे सभ जाइते अछि। जकर खेत बान्हक कात मे नहि छै से की अपन खेत पर नहि जा सकैए। अहाँ तँ नबका लोकक भिन्न-भिनाउज बला गप क' रहल छी।''

''मुदा ई सभ अहाँ पहिने कहाँ कहने रही।''

''दीदी, अहाँ कें सभ टा कहने रही। मुदा लगैत अछि जे अहाँ कें धोखा भ' रहल अछि। नहि विश्वास होइ अछि तँ दासजी कें बजा दैत छी। ओ तँ तेहल्ला अछि।''

''अच्छा तँ ओहो मिलल अछि।''

''दू रजिस्ट्रीक कागत बना क' बेचारा एक रजिस्ट्रीक पाइ लेलक आ अहाँ कहि रहल छी जे मिलल अछि।'' भातिजक स्वर तीव्र भ' गेलनि। हाँफय लगलाह आ जोर-जोर सँ बजैत बिदा भ' गेलाह।

अनमाना दीदीक लेल नैहरक ई भोर सासुरक ओहि भोर जकाँ रहनि जाहि दिन ओ विधवा भेल रहथि। आइ गामक धी-बेटी ढील-लीख बिछबा लेल नहि अयलीह। अनमाना दीदीक राति भरिक वार्तालाप बजरंगबलीक संग एखने एहि भोर मे खतम भेल अछि। लोक सभ अँगना मे बच्चा कें ठोकि क' सुता रहल रहय। भोर मे किछु गोटे आबि पंचैती करेबाक सुझाव द' गेलनि। मुदा अनमना दीदीक रोष तँ बजरंगबली सँ छलनि।

''भगवानक जमीन अदहा बेचि क' भगवानक घर बनबितहुँ, मुदा मंदिरक सटल जमीन रजिस्ट्री करा लेलक आ जे जमीन बचल ओहि सँ मंदिरक लागिये नहि रहल। लागि तँ छोड़ ओहि पर जयबाक रस्ते बन्न क' देलक। आ ई बजरंगबली! महावीर! कोन शक्ति छै एकरा मे? चालीस साल पेट काटिक' हिनका खोपड़ी सँ पक्काक घर मे अनलहुँ। ढलैय्या भ' जइतय, चहारदेवारी बनि जइतय सैह टा मनोरथ रहय, आ सेहो हिनके लेल।...''

एहि भोर मे भातिजक द्वारि पर ठाढ़ अनमना दीदी। लोक सभक मोने जे आब आर बाझत झगड़ा। मुदा ई की भ' रहल अछि। लछमियाँक भाइ रिक्शा अनलक अछि। अनमाना दीदी भातिजक संग झंझारपुर जा रहल छथि। के कहलक? हुनका सँ तँ ककरो गपो नहि भेल रहै। हम कहनहियो रहियनि पंचैती कराऊ, मुदा मना जकाँ क' देने रहथि। अच्छा, लछमीक भाय कहलक। हँ, रिक्शा बजबै लेल जे गेल रहय, से कहने हैत जे झंझारपुर जेबाक अछि। दासजी कँे एक टा आर रजिस्ट्रीक कागत बनब' पड़लनि। अनमाना दीदी कँे देखि ओ सर्द भ' गेल रहथि जे जानि नहि बूढ़ी की सभ सुनओथिन। मुदा अनमाना दीदी ततेक ने तामस मे छलीह जे किछु नहि बजलीह। तामस पीबि गेलीह। ओहो पाछू बला जमीन भातिज कँे रजिस्ट्री क' देलनि। आ झंझारपुर-स्टेशन सँ घुरि क' झंझारपुर बजार दिस बेटा-पुतोहु लग पयरे विदा भेलीह।

लछमीक भाइ घुरि आयल। दू सवारी कँे ल' गेल रहय मुदा मात्र एक सवारी ल' क' घुरि आयल। संग मे संदेश लेने गेल। लछमी मिस्त्री आ करीम मिआँ लेल संदेश। काल्हि भोरे सँ काज आरम्भ। फेर सँ?

चहरदेबाली बनल। भगवानक मंदिर आ अनमाना दीदीक घर कँे बारि क'। कहि देने छियनि दीदी कँे। हुनका जिबैत क्यो छूतनि नहि हुनकर घर।

घर आकि खोपड़ी, एक साल कनेक टूटल। दोसर भंदबरिया मे खुट्टा सरि क' खसि पड़ल। मुदा अनमाना दीदी नहि अयलीह। समाद देने रहनि नैहरक एक गोटे। ढलैया नहिये भेलनि बजरंगबलीक। अनमाना दीदी हरिद्वार सँ घुरि अयलीह। लोक पुछलकनि—की माँगलहुँ गंगा माय सँ।

''यैह जे अंधविश्वास हमरा मोन सँ हटा दिअ।''

''आ की देलियनि गंगा माए कँे?''

''अपन तामस द' देलियनि।''

अनमाना दीदी यैह कहथि—की करबनि। कोनो शक्तिये नहि छनि बजरंगबली मे। खसय दियौक खोपड़ी। सोंगर लागल घर कतेक दिन काज देत।

कैक बरख बीतल। कैक बरख नहि पाँचमे साल तँ। भातिज गाम पर आयल रहथि। दरमाहा उठा क'। पोखरि दिस सँ चप्पाकल पर। लोटा लेने बैसलाह आकि छाती मे दर्द उठलनि। नहि बचि सकलाह। लोक सभ कहय, देखू अनमाना दीदीक श्राप, बड्ड कानल रहथि दीदी ओहि दिन। ओहि सँ पहिने बजरंगबलीक मूर्ति मे ठीके शक्ति नहि रहए। मुदा हृदय सँ देल श्राप लागै छै। ओही दिन जागृत भ' गेल रहथि बजरंगबली। आ आइ शक्ति देखा देलखिन। मुदा समदिया कँे अनमाना दीदी कहलखिन जे पाथरो मे जान होइ छै। हर्ट अटैक भेल होयतैक। परसू एतहि एक टा मारवाड़ी कँे अटैक भेल रहै। चिन्ता-फिकिर सँ होइत छै एकर अटैक। एतए डाकडर सभ रहै, मारवाड़ी बाँचि गेल। गाम मे देरी भेने जान नहि बचै छै। तँ ने हमहूँ एहि बुढ़ारी मे बेटे पुतोहु लग झंझारपुर मे रहि रहल छी।

गाम अछि महिसबार ब्राह्मणक गाम। सुखरातिक दिन हूड़ा-हूड़ीक खेल जे एहि महिसबार ब्राह्मण सभक देखलहुँ तँ पोलोक खेल मे कोनो रुचि नहि रहल। समियाक डोम सँ कीनल सुग्गर कँे भाँग पिआए मातल महीस द्वारा हूड़ा लेब।

चरबाह जे महीसक पहुलाठ पकड़ि कलाकारी सँ बैसल छल सेहो अद्‌भुते। डोमक काज पाबनि-तिहार मे तँ होइते अछि। पेटार बनेबा सँ सूप, बीअनि सभ किछु बनेबा मे डोमक काज आ पाहुन-पड़क लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जायत ताहि लेल मिआँटोलीक काज। खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलि मे कमिटी ल' लैत अछि।

धुर कत' भाँसि गेलहुँ!

से मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल क' क'। गरदनि अदहा लटकले रहैत छै, मुदा माउस बना-सोना क' गरदनि ल' जाइये आ खलरा सेहो। तखन महिसबार ब्राह्मण मे सँ जे हनुमानजी मंदिर पर भजन आ अष्टजाम करैत छथि से ओही खलरा सँ बनल ढोलक किनैत छथि। आ से कीर्तन भइयो रहल छल।

सिद्ध महावीर मंदिरक आगाँ रामनवमी दिन गाड़ल बड़का धुजा। टनटनाइत घड़ीघण्ट आकि आर किछु। हनुमानजीक धुजा फहरा रहल अछि। साँझक काल। महिसबार सभक आगम भ' गेल अछि। कोनो पाबनि हुअय, हूड़ाहूड़ी आकि रामनवमी सिद्ध हनुमानजीक आगाँ कीर्तन होइते अछि। से बाबू गौँआक श्रद्धाक गप छिऐ! से आइयो भ' रहल अछि।

घूरक धुआँ माल बिठौरी कँे मालक देह सँ अलग करबाक प्रयास मे अछि। एक गोटेक संग दोसर गोटे आयल छथि, सप्पत खयबाक लेल। हनुमानजीक मंदिर गौँआ सभ प्लास्टर करबा देने छथि। ढलैय्या सेहो भ' गेल अछि। मंदिरक बरण्डा छूबि क' ऋण पचेनहारक संख्या नगण्य, तैयो एक टा अपवाद तँ अछिये। ओ कहै छथि—सप्पत तँ तोड़बा लेल खायल जाइ छै। हँ भाइ, एक बेर सप्पत खेने जँ ऋण सँ विमुक्ति भेटि जाए तँ हर्जे कोन। मुदा एकेटा अपवाद। अनमाना दीदी कँे आब सभ अनमाना बाबा सेहो कहैत छनि। कैक बरख भेल मुइना हुनकर। घुरि क' नहिये अयलीह। भातिज घराड़ीक दोष निवारणार्थ कोनो पंडितक कहला पर खुट्टा पर एक टा गाय बान्हि देने छै, जकरा एनहार-गेनहार सदिखन घास खाइत देखैत छथि, तहि सँ घराड़ी कँे नजरि-गुजरि नहि लगतै।

हनुमानजीक धुजा फहरा रहल अछि। साँझक काल। गोनर भाइ कीर्तन मे ढोलकक थाप पर थाप लगा रहल छथि।

अनमाना बाबाक गप आब किछु लोको सभ मानलक। ठीके। हनुमानजीक मूर्तिक आगाँ भक्तक दू टा गोल बनि गेल अछि। एक गोलक विचार कनेक वैज्ञानिक छै—अनमाना दीदी जे बाँचल दस कट्ठाक रजिस्ट्री क' देलखिन सैह ने पैसा देलकै चिन्ता-फिकिर भातिजक छाती मे। नहि सम्हारि सकल अनमाना दीदीक ई आक्रमण ओ। ठीके पाथर मे कोनो शक्ति थोड़बे होइ छै। मुदा दोसर गोल महावीर हनुमानजीक सिद्ध आ जागृत होयबा मे विश्वास क' रहल अछि—यौ, चुट्टी कँे माटि द' दियौ तँ ओहो मरि जायत मुदा बिकुटि क' जे काटत से छोड़त नहि। आ ई माटि अनमना दीदी महावीरजी कँे देलखिन्ह तँ ओ कोना छोड़ि दितथिन।

गोनर भाइ कीर्तन मे ढोलक पर थाप पर थाप लगा रहल छथि, बुझू सिद्ध महाबीरजी कँे मनाइये क' छोड़ताह, भाँगक गोलाक संग देसी पाउच असरि क' रहल छनि, आँखि तँ चढ़ले छनि, हाथ सेहो रुकैक नाम नइँ ल' रहल छनि, आ हुनकर नजरि सँ देखी तँ सिद्ध महावीरक पाथरक मुरुत जागृत भ' गेल देखा पड़त, जेना ओहि मे जान आबि गेल हो!



संपर्क : 389, पॉकेट-सी, सेक्टर-ए
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
मोबाइल : 9911382078
ई-मेल : ggajendra@gmail.com